अभ्यास पत्रक

पाठ – मनुष्यता

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. काव्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"सहानुभूति से सुमन सजाएँ
दु:ख-शोक-श्रद्धा-गाथा गाएँ
अति सरल सेवा-सुत तव बन
सबको वरदान बनाने मन।"

1. कवि यहाँ किस भावना को 'सुमन' के रूप में सजाने की बात कर रहे हैं?

उत्तर - .....
.....

2. 'सेवा-सुत' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....
.....

3. इन पंक्तियों में कवि मानव जीवन का क्या उद्देश्य बताते हैं?

उत्तर - .....
.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** कवि ने सहानुभूति को मनुष्य का परम गुण बताया है।
   कारण: सहानुभूति दूसरों के दु:ख को महसूस करने और सहायता देने की प्रेरणा देती है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

5. **कथन:** आत्मोन्नति के लिए केवल ध्यान और तपस्या पर्याप्त हैं।
   कारण: परोपकार और सेवा आत्मा को भ्रष्ट करते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. 'मनुष्यता' कविता में कौन-सा मुख्य गुण सबसे श्रेष्ठ बताया गया है?
   (क) बल (ख) बुद्धि (ग) दया (घ) सहानुभूति

7. कवि के अनुसार मानव का सबसे बड़ा उद्देश्य क्या है?
   (क) शक्ति प्राप्त करना (ख) सेवा और परोपकार करना
   (ग) शिक्षा प्राप्त करना (घ) यश अर्जित करना

8. 'सुमन सजाएँ' पंक्ति का सही अर्थ क्या है?
   (क) पुष्प बनाना (ख) फूल तोड़ना
   (ग) सुंदर भावों को विकसित करना (घ) उद्यान सजाना

9. 'मनुष्यता' कविता का लहजा किस प्रकार का है?
   (क) उपदेशात्मक (ख) वीर रस से ओतप्रोत
   (ग) व्यंग्यात्मक (घ) ऐतिहासिक

eGyanArchive

10. कवि ने मनुष्यता को किससे ऊपर स्थान दिया है?

(क) विद्या से (ख) तपस्या से (ग) यश से (घ) बल से

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. कवि के अनुसार मनुष्य का मन 'वरदान' कैसे बन सकता है?

उत्तर - .....

.....

.....

12. कवि ने सेवा भावना को श्रेष्ठ क्यों माना है?

उत्तर - .....

.....

.....

13. मनुष्य को मनुष्यता का आदर्श कैसे अपनाना चाहिए?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. 'मनुष्यता' कविता में कवि ने मनुष्य जीवन की सार्थकता किन कार्यों में बताई है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "आज के समाज में 'मनुष्यता' कविता के संदेशों की अत्यधिक आवश्यकता है" – इस कथन की पुष्टि कविता के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. कवि सहानुभूति, सेवा और त्याग की भावना को सुंदर फूलों के समान सजाने की बात कर रहे हैं।
2. सेवा करने वाला व्यक्ति – जो सरलता और प्रेम से दूसरों की सहायता करता है।
3. मानव जीवन का उद्देश्य सेवा, संवेदना और दूसरों के जीवन को सुखी बनाना होना चाहिए।
4. (क)
5. (घ)
6. (घ)
7. (ख)
8. (ग)
9. (क)
10. (ख)
11. जब मनुष्य दूसरों की सेवा, सहायता और सहानुभूति में स्वयं को समर्पित कर देता है, तब उसका मन 'वरदान' बनता है।
12. क्योंकि सेवा दूसरों के दुःख को दूर करती है और यह मनुष्यता का सबसे ऊँचा आदर्श है।
13. दूसरों के दुःख में सहभागी होकर, अपने सुख का त्याग करके और आत्मीयता से भरे व्यवहार द्वारा।

14. कविता में कवि ने बताया है कि मनुष्य जीवन की सार्थकता केवल जीने में नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीने में है। कवि के अनुसार सेवा, सहानुभूति, परोपकार, दुःखी के आँसू पोंछना, जरूरतमंद की सहायता करना – यही वे कार्य हैं जो मनुष्य को 'मनुष्य' बनाते हैं। उन्होंने बताया कि आत्मोन्नति, मोक्ष या यश प्राप्ति से पहले हमें अपनी मानवता को जागृत करना चाहिए। सेवा के भाव से ही हमारा मन 'वरदान' बनता है और यही सच्चा धर्म है।

15. आज का समाज जहाँ स्वार्थ, भेदभाव और असंवेदनशीलता से ग्रस्त है, वहाँ 'मनुष्यता' कविता के संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने इस कविता में बताया है कि सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों की सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर दे। आज जहाँ मानवता संकट में है, वहाँ सहानुभूति, परोपकार और सेवा जैसे मूल्य फिर से अपनाने की आवश्यकता है। कवि ने दया को नहीं, सहानुभूति को मनुष्य की महाविभूति कहा है – यानी दूसरों की पीड़ा को अनुभव करके उसकी सहायता करना। यदि हम इस कविता के संदेश को अपनाएँ तो समाज में एकता, शांति और प्रेम का वातावरण बन सकता है। इसीलिए 'मनुष्यता' आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।